Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में जनजातीय लोक नृत्य का परिचयात्मक विवरण

Dr. Rajesh Kumar Durve*

Intelligent Guest (Hindi) Rani Durgawati Govt. PG College, Mandla (MP)

----------X----------

छत्तीसगढ़ के लोक गीतों में जनजातीय लोक नृत्य उनकी संस्कृ ति एवं सामाजिकता को अभिव्यक्त करते है। दूसरे शब्दों में कहे तो इन लोक नृत्य के माध्यम से अपने विचार, विश्वास तथा मूल्य को व्यक्त करते है और उनके माध्यम से सामाजिक संबंधों का ताना–बाना प्रतिबिमवित होता है ।छत्तीसगढ़ में नृत्य की सैकड़ों विधाएं है। इनमें से कुछ नृत्यों का परिचय यहां प्रस्तुत है–

1. सुआ नृत्य– अथवा गीत–नृत्यदृ सुआ छत्तीसगढ़ में मूलतरू महिलाओं और किशोरियों का नृत्य पर्व है। छत्तीसगढ़ी जनजीवन में सुआ नृत्य की लोकप्रियता सबसे अधिक है। इसमें सभी जाति वर्ग की स्त्रियां हिस्सा लेती है । दीपावली के कुछ दिन पूर्व से सुआ नृत्य शुरू होता है और समापन दीपावली की रात्रि में शिव गौरा विवाह के आयोजन से होता है। इसलिए सुआ नृत्य को गौरा नृत्य भी कहा जाता है। महिलाएं अपने–अपने गांव में टोली बनाकर समीप के गॉवों में भ्रमण करती है और प्रत्येक घर के सामने गोलाकार झुण्ड बनाकर ताली की थाप पर नृत्य करते हुए गीता गाती है। घेरे के बीच में एक युवती सिर पर लाल कपड़ा ढँके टोकनी लिए होती है। टोकनी में धान भरकर उसमें मिट्टी से बने दो तोते सजाकर रखे जाते है। ये तोते शिव–पार्वती (गौरा) के प्रतीक माने जाते है सुआ नृत्य करते समय टोकनी के बीच में रख दिया जाता है और लाल कपड़ा उघाड़कर तोते खुले कर दिये जाते है फिर महिलाएं सामूहिक स्वर में सुआ–गीत गाती हुई वृत्ताकार में झुक–झुकर ताली बजाते हुए नृत्य करती है। कभी–कभी सुआ गीत में प्रश्न–उत्तर शैली भी अपनाई जाती है। सुआ प्रेम का गीत नृत्य है। सुआ गीत में किशोरियॉ अपने प्रेमी को सुआ के माध्यम से संदेश भेजती है। धान कटाई के बाद सुआ नृत्य उत्तरी और मध्य छत्तीसगढ़ में बड़ी उमंग–उल्लास के साथ किया जाता है। सुआ नृत्य में जितनी नृत्य की केन्द्रीयता है उतने ही सुआ गीत भी महत्वपूर्ण है। सुआ गीत की पारंपरिक लोक धुन अत्यंत मधुर और प्रभावकारी है सुआ गीत नारी जीवन के समस्त सुख–दुख और प्रेम करूणा के गीत है। बस्तर में सुआ नृत्य का प्रचलन अधिक है।

2. चन्देनी– लोरिक–चंदा के नाम से ख्यात चंदेनी छत्तीसगढ़ में दो शैलियों में पाया जाता है। एक लोक कथा के रूप में दूसरा गीत–नृत्य के रूप में। पुरूष पात्र विशेष वेशभूषा में नृत्य के साथ चंदेनी कथा प्रस्तुत करता है। नृत्य गीत रात–रात भर चलता है। बीच–बीच में विदूषक चलती मसाल से करतब दिखाता है। चंदने–नृत्य में टिमकी, ढोलक, की संगत परंपरागत है। लोरिक चंदा मूलतरू प्रेम कथा है।

3. राउत नाच– राउत नाचा राउत–समुदाय का नाच है। राउत–नाच दीवाली पर किया जाने वाला परंपरागत नाच है। इस नृत्य में लोग विशेष वेशभूषा पहनकर हाथ में सजी हुई लकड़ी लेकर टोली में गाते और नाचते हुए निकलते है। गॉव में प्रत्येक घर मालिक को अशीर्वाद देते है। टिमकी, ढोलक, सिंग–बाजा इसके खास वाद्य है। नृत्य के पहले दोहरे अर्थात दोहे गाये जाते है। दोहे श्रृंगार प्रेम और हास्य तथा पौराणिक संदर्भो को लिए हुए होते हैं।

4. पंथी नाच– पंथी छत्तीसगढ़ की सतनामी जाति का लोकप्रिय नाच है। किसी तिथि त्यौहार पर सतनामी ''जैतखाम'' की स्थापना करते है और परम्परागत ढंग से नाचते–गाते है। पंथी नाच की शुरूआत देवताओं की स्तुति से होती है पंथ गीतों का प्रमुख विषय गुरूघासीदास का चरित्र होता है। गुरूघासीदास के पंथ में पंथी नाच के संज्ञा का अभिज्ञान हुआ है। पंथी नाथ के मुख्य वाद्य मॉदर–झॉझ होते है। पंथी नाच द्रुत गति का नृत्य है। नृत्य का आरंभ विलंबित होता है, परन्तु द्रुत गति के चरम पर होता है। गीत और लय का समन्वय नृर्तकों के गतिशील हाव–भाव में देखा जा सकता है। पुरूष टोली बनाकर नाचते है। महिलाएं सिर पर कलश रखकर नाचती है मुख्य नर्तक पहले गीत की कड़ी उठाता है और अन्य नर्तक उसे दोहराते हुए तेजी से नाचते है। पंथी नर्तकों की देहगति और नृत्य–मुद्राएं इतनी तेजी से बदलती है कि दर्शक श्रोता आश्चर्य चकित रह जाते है।

5. करमा नृत्य– करमा नृत्य की परम्परा भारत की अधिकांश जनजातियों में है। छत्तीसगढ़ में गौंड़, बैगा, उरॉव, मुंडा, कमार, कवर, पंडा, बिंझवार, बिराहोर आदि जनजातियों में करमा नृत्य किया जाता है। प्रतिवर्ष कुँवार माह में करम वृक्ष की पूजा करके आदिवासी करमा नृत्य का आयोजन करते है। करमा

www.ignited.in

नृत्य गीतों में आदिवासियों के प्रेम, श्रंगार के साथ जीवन की प्रत्येक गतिविधि की समसायिक समग्र अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। करमा मूलतरू मुंडा तथा उरॉव जनजाति का आदिम नृत्य है। करमा का विस्तार छत्तीसगढ़ के बस्तर, दंतेवाड़ा, तथा कांकेर को छोड़कर सभी जिलों तक है । करमा कही पुरूष परक और स्त्री परक दोनों की समान भागीदारी का नृत्य है। करमा का केन्द्रीय वाद्य मॉदर है करमा के झरपट, लहकी, झूमर, लगड़ा, ठाडा आदि कई भेद है।

6. सैला– सैला जनजातियों का प्रमुख नृत्य है। सैला चॉदनी रात में किया जाता है। इसकी शुरूआत शरद पूर्णिमा से होता है। हाथ का डंडा हाथ में रखकर नाचने के कारण इस नृत्य का नाम सैला पड़ा है। सैला युवा उल्लास और खुशी का नृत्य है। इसमें स्त्री–पुरूष दोनों बराबरी से हिस्सा लेते है। सैला गौंड़, बैगा, परधान आदि जनजातियों में किया जाता है। इस नृत्य का पूरा नाम सैला–रीना है। इसका मुख्य वाद्य मॉदर है।

7. परधोनी नृत्यदृ परधोनी बैगा आदिवासियों का विवाह नृत्य है। बरात की अगवानी के समय खटिया, सूप, कम्बल, आदि से हाथी बनाकर नचाया जाता है। हाथी पर समधी को बैठाकर नृत्य गीत गाते हुए नचाने का रिवाज है। हाथी के आगे दुल्हन होती है। परधोनी नृत्य का मुख्य वाद्य नगाड़ा और टिमकी है।

8. बिलमा–गोंड़ और बैगा जनजातियों का नृत्य है। यह दशहरे के अवसर पर किया जाता है। एक गॉव के युवक और युवती अलग–अलग समूह में दूसरे गॉव में नृत्य करने के लिए जाते है। बिलमा में प्रायरू कुँवारी लड़कियॉ विशेष सजधज के साथ हिस्सा लेती है और नृत्य करते–करते अपने मन पसंद युवक को चुन लेती है। इस नृत्य का प्रमुख वाद्य मॉदर है।

9. फाग नृत्य– गौंड–बैगा आदिवासी होली पर नृत्य का आयोजन करते है। इसमें गॉव के सभी युवक–युवती और प्रौंढ़ आदिवासी उल्लास के साथ हिस्सा लेते है। इस समूह नृत्य में एक या दो व्यक्ति लकड़ी के मखौटे और हाथ में लकड़ी की चिडिया आदि नचा–नचाकर भरपूर मनोरंज करते है। फाग में मॉदर, टिमकी आदि प्रमुख वाद्य होते है।

10. थापटी नृत्य– थापटी कोरकू जानजाति का नृत्य है। इसमें स्त्री–पुरूष दोनों हिस्सा लेते है। पुरूष हाथ में पंचा और महिला नर्तक दोनों हाथ में चिटकोरा बजाते हुए नृत्य करती है। थापटी नृत्य वैशाख के महने में किया जाता है। थापटी नृत्य का मुख्य वाद्य ढोलक और बॉसुरी है। कोरकू पर्व–त्यौहारों में थापटी के अलावा ढोलक, चाचरी, फगतई, ठाठ्या आदि नृत्यों का आयोजन करते है।

11. ककसाड़ नृत्यदृ ककसाड़ बस्तर की मुरिया जनजाति का लोकप्रिय पारम्परकि नृत्य है। ककसाड़ मूलतरू जात्रा नृत्य है। गॉवों के धार्मिक स्थल पर मुरिया आदिवासी वर्ष में एक बार ककसाड़ जात्रा पर पूजा का आयोजन करते है। लिंगोपन को प्रसन्न करने के लिए युवक–युवती अपनी साज–सज्जा करके रात नृत्य–गायन करते है। पुरूष कमर में घण्टी बॉधते हैं, स्त्रियॉ सिर पर विभिन्न झूलों और मोतियों की माला पहनती है।

12. गेंडी नृत्य– गेंडी बस्तर की मुरिया जनजाति का एक विशेष नृत्य है। दो नर्तक टिमकी बजाते हैं और उनको घेर कर आठ–दस युवक या इससे अधिक गेंडी पर चढ़कर लय गति के साथ नृत्य कठिन मुद्राएं आयोजित करते है। गेंडी पूरी तरह से संतुलन का नृत्य है।

13. गँवर नृत्यदृ गँवर नृत्य बस्तर की मीडिया जनजाति का अत्यन्त लोकप्रिय नृत्य है। आदिवासी जनजीवन के अध्येता वेरियर एल्विन ने गँवर–नृत्य को संसार का सबसे सुन्दर नृत्य निरूपित किया है। नृत्य के समय माडिया युवक गँवर नामक जंगली पशु और कौडियों से सज्जित मुकुट सिर पर पहनते है। इसलिए इस नृत्य की गॅवर नृत्य कहते है। गँवर नृत्य में युवतियॉ सिर पर पीतल का मुकुट और हाथ में लोहे की छड़ रखती है। युवतियॉ तीव्र स्वर में गीत गाती हुई नृत्य करती हैं और विभिन्न प्रकारकी सुन्दर मुद्राएं बनाती है।

14. दोरला नृत्य– दोरला बस्तर की एक जनजाति का नाम है। इसी के नाम से नृत्य का नाम दोरला नृत्य पड़ा। दोरला जनजाति अपने विभिन्न, पर्व–त्यौहार, विवाह आदि में पारंपरिक नृत्यों का आयोजन करती है। विवाह और पर्व पर पेण्डुल नृत्य करने की परिपाटी दोरला जनजाति में है। नृत्य में स्त्री–पुरूष दोनों सहभागी होते है। पुरूष पंचे, कुसमा, रूमाल एवं स्त्रियॉ रहके बट्टा पहनती है। दोरला नृत्यों का प्रमुख विशेष प्रकार का ढ़ोल होता है।

15. सरहुल– सरहुल उरॉव तथा मुण्डा वर्ग की जनजातियों का नृत्य है। उरॉव जनजाति का निवास रायगढ़ और सरगुजा में है। उरॉव वर्ष में चौत्रमास की पूर्णिमा पर शाल वृक्ष की पूजा का आयोजन करते हैं और उसके आसपास नृत्य करते हैं। सरहुल एक समूह नृत्य है। इसमें युवक–युवती और प्रौढ़ उमंग और उल्लास से हिस्सा लेते हैं। सरहुल नृत्य का प्रमुख वाद्य मॉदर और झॉझ है। नृत्य में पुरूष नर्तक विशेष प्रकार का पीला साफा बॉधते हैं। महिलाएं अपने जूडे में बगुले के पंख की कलगी लगाती हैं। नृत्य में पद संचालन वाद्य की ताल पर नहीं, बल्कि गीतों की लय और तोड़ पर होता है।

16. कोल दहका नृत्यदृ कोल दहका कोल–जनजाति का पारंपरिक नृत्य है। इसे कोलहाई नाच भी कहते है। सरगुजा जिले में कोल जनजाति की बहुलता है। इसमें पुरूष वादक और गायक दोनों की भूमिका निभाते है। महिलाएं सादी वेशभूषा में नाचती है और साथ–साथ गाती भी है। महिलाओं के चेहरे पर घूँघट होता है। गीतों में सवाल जवाब होते है। नृत्य करते–करते गाए सवाली गीत का जवाब पुरूष गायकों को देना होता है। कोल दहका के केन्द्र में महिलाओं का नृत्य और पुरूषों का ढोलक–वादन है। तीन से लगाकर पॉच छह तक ढ़ोलके तीव्रता से

www.ignited.in

बजाई जाती है। झॉझ की झंकार नृत्य को मधुरता प्रदान करती है। पुरूष उच्च स्वर में गाते है। बीच–बीच जोर की हुंकार नृत्य को गति देती है। महिलाएं पैरों की गति के साथ हाथों की अंगुलियों को नचाते हुए नृत्य करती हैं। नृत्य करते समय कमर तक झुकती है। सम पर खड़ी होकर गोल घूमती है। ढोलक की गति जितनी तेज होती है। उतनी ही नृत्य तेज होता है।

उपर्युक्त विवेचन के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि छत्तीसगढ़ी लोक नृत्य में जीवन के सभी रंग रंजित हुए है। जीवन के प्रति निष्ठा है, आस्था है, ममता है, आशा है। शिष्ट साहित्य और शास्त्री संगीत को इनसे प्रेरणा मिल सकती है। नयी अभिव्यक्ति शैली और भाषा सौष्ठव में लोक नृत्य का योगदान है।

संदर्भ सूची–

छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और लोक साहित्य का अध्ययन–डॉ. शकुन्तला वर्मा पृष्ठ–97–98

लोक साहित्य विज्ञान डॉ. सतेन्द्र पृष्ठ–189

छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और लोक साहित्य का अध्ययन–डॉ. शकुन्तला वर्मा पृष्ठ–102

प्रकृति और काव्य–डॉ. रघुवंश पृष्ठ–331

लोकसाहित्य की भूमिका– सत्यव्रत अवस्थी पृष्ठ –71

भारत की लोककथाएं– सीता देवी, भूमिका पृष्ठ– 5

सम्मेलन पत्रिका(लोक संस्कृति अंक) लोक नृत्य और लोक–वाद्यो में लोक जीवन की व्याख्या– श्री शांति अवस्थी पृष्ठ– 374 एवं 276

Corresponding Author

Dr. Rajesh Kumar Durve*

Intelligent Guest (Hindi) Rani Durgawati Govt. PG College, Mandla (MP)

E-Mail –